जज़्बा-ए-दिल[1] को अमल में कभी लाओ तो सही
अपनी मंज़िल की तरफ़ पाँव बढ़ाओ तो सही

ज़िन्दगी वो जो हरीफ़े-ग़मे-अय्याम[2] रहे
दिल शिकस्ता[3] है तो क्या, साज़ उठाओ तो सही

जाग उठेगी ये सोई हुई दुनिया, लेकिन
पहले ख़्वाबीदा तमन्ना[4] को जगाओ तो सही

फूल ही फूल हैं कहते हो जिन्हें तुम काँटे
मेरी दुनिया-ए-जुनूं में कभी आओ तो सही

करते फिरते हो अंधेरे की शिकायत 'दर्शन'
दिल की दुनिया में कोई दीप जलाओ तो सही

[1]मन की भावना [2]ज़माने के उतार चढ़ाव का मुकाबिला करे [3]टूटा [4]सोई हुई मन की इच्छा

मस्ताना हवाएं चलने लगीं आओ छलकाएं जामे-ग़ज़ल

पैग़ामे-शमीमे-गुलशन[1] से रंगीन हुई फिर शामे-ग़ज़ल

मौसम के निगारो[2] आ जाओ होंटों पे लिए पैग़ामे-ग़ज़ल

तकता है तुम्हारी आहट को हर सहने-ग़ज़ल[3], हर बामे-ग़ज़ल[4]

ये ढलती रात की तन्हाई[5] ये चश्मे-तमन्ना[6] भीगी हुई

ये दर्दे-जुनूं[7] की बेदारी[8] फ़ैज़ाने[9]-ग़ज़ल, इनआमे[10]-ग़ज़ल

आँखों को उजाले मिलते हैं ख़्वाबों के शगूफ़े[11] खिलते हैं

क्या बात है आरिज़-ओ-गेसू[12] की, इक सुब्हे-ग़ज़ल, इक शामे-ग़ज़ल

अफ़्कारे-शमीमे-दाना[13] से दुनियाए-अदब[14] में ऐ 'दर्शन'

ताबाँ-ओ-हसीं[15] है सुब्हे-सुख़न[16], रंगीन-ओ-जवां है शामे-ग़ज़ल

[1]फुलवाड़ी की खुश्बुओं से [2]सुन्दर आकृतियों [3]आँगन [4]छज्जा [5]अकेलापन [6]कामना भरी आँख [7]दीवानगी का दर्द [8]जागरण [9]देन [10]उपहार [11]सपनों की कलियाँ [12]गोरे गाल, काले बाल [13]हज़रत 'शमीम' करहानी (संत दर्शन सिंह जी महाराज के उर्दू शायरी के उस्ताद) के चिंतन से [14]साहित्य जगत [15]सौंदर्य से आलोकित [16]काव्य की प्रभात

वो पैकरे-बहार[1] थे, जिधर से वो गुज़र गए
ख़ज़ां[2] नसीब रास्ते भी सज गए संवर गए

ये बात होश की नहीं ये रंग बेखुदी[3] का है
मैं कुछ जवाब दे गया, वो कुछ सवाल कर गए

मेरी नज़र का ज़ौक़[4] भी शरीक-ए-हुस्न[5] हो गया
वो और भी संवर गए, वो और भी निखर गए

हमें तो शौक़े-जुस्तजू[6] में होश ही नहीं रहा
सुना है वो तो बारहा[7] क़रीब से गुज़र गए

नवाए-'दर्शने'-हज़ीं[8] बहुत नहीफ़[9] थी मगर
फ़ज़ाए-दिल[10] की ख़ामुशी में फूल से बिखर गए

[1]वसंत की आकृति [2]पतझड़ [3]मस्ती [4]प्रेम [5]उनके सौंदर्य में शामिल [6]ढूंढ़ने की जिज्ञासा [7]बार-बार [8]ग़म के मारे दर्शन की आवाज़ [9]कमज़ोर [10]दिल के वातावरण

निगाहे-मस्ते-साक़ी का सलाम[1] आया तो क्या होगा
अगर फिर तर्के-तौबा[2] का पयाम[3] आया तो क्या होगा

मुझे मंज़ूर, उनसे मैं न बोलूँगा मगर नासेह[4]
अगर उनकी निगाहों का सलाम आया तो क्या होगा

मुझे तर्के-तलब[5] मन्ज़ूर, लेकिन ये तो बतला दो
कोई खुद ही हाथों में जाम आया तो क्या होगा

मुहब्बत के लिए तर्के-ताल्लुक[6] ही ज़रूरी हो
मुहब्बत में अगर ऐसा मक़ाम आया तो क्या होगा

जहाँ कुछ ख़ास लोगों पर निगाहे-लुत्फ़ है 'दर्शन'
अगर उस बज़्म[7] में दौरे-अवाम[8] आया तो क्या होगा

[1]निमंत्रण [2]वचन तोड़ने [3]सन्देश [4]सलाहकार [5]तलब का त्याग [6]संबंध तोड़ना [7]सभा [8]जनता का युग

तेरा हुस्न[1] शाम-ओ-सहर[2] देखते हैं

फ़रोजिंदा शम्स-ओ-क़मर[3] देखते हैं

न पहुंचे मुसाफ़िर[4] तेरे नक़्शे-पा तक[5]

अभी राह में संगे-दर[6] देखते हैं

जो बैठे हैं आकर सरे-बज़्म[7] साक़ी

उन्हें आज शीर-ओ-शकर[8] देखते हैं

जिन एहले-जुनूं[9] को है सौदा-ए-मंज़िल[10]

वो रहरौ[11] नहीं रहगुज़र[12] देखते हैं

अजब हाल है तेरे 'दर्शन' का मुर्शिद

हमेशा उसे चश्मे-तर[13] देखते हैं

[1]सौंदर्य [2]रात-दिन [3]चाँद और सूरज ज़्यादा चमकदार दिखते हैं [4]यात्री [5]चरण चिन्ह [6]रुकावट [7]सत्संग मंडल 8दूध-चीनी की तरह घुलमिल कर बैठे [9]प्रेमोन्माद [10]मंज़िल तक पहुँचने की लगन [11]पथिक [12]पथ [13]आँसुओं से भरी आँखें